प्रेमशंकर शुक्ल की दो कविताएं

'पूर्वग्रह' में सह सम्पादक प्रेमशंकर शुक्ल वर्षों से कविताएं लिख रहे हैं। *'कुछ आकाश'* नाम से कविता संग्रह। किताब एक अवार्ड अनेक।

आवाज

मनुष्य के इतने लम्बे जीवन से
यह अनुभव तो आया ही है
कि जिन्दा रहने का मतलब
उजली आवाज की परवरिश में होना है

अन्याय, अंधरे के खिलाफ
बियाबान को तोड़ती
कंठ में बह रही है आवाज

आवाज के सहारे ही हम पार करते हैं
अबूझ जंगल और ऊंचे पहाड़
राह तो आवाज की सनातन संघाती है

आवाज का चुप से सघन रिश्ता है
और शुरू से ही हैं दोनों एक दूसरे के आसपास
आवाज के होंठ जब नहीं खुलते
चुप्पी की आवाज से हम पढ़ सकते हैं
आवाज की धड़कन। शोर आवाज नहीं है।

आवाज को बंद करने के लिए ही
तानाशाह खड़ी करते हैं फरमानों की दीवार
और तैनात करते हैं हथियारों से लैस गारद
हुक्मरानों को सबसे अधिक खतरा
आवाज से ही रहा है बरहमेश
इसीलिए वे आवाज पर नजर रखने के लिए
सक्रिय रखते हैं अपना खुफिया तंत्र
आवाज भी कम जिद्दी नहीं है
उसे जितना दबाया जाता है
उतनी ही होती जाती है वह विकराल

वक्त जब शामिल रहता है अंखमुंदी दौड़ में
आवाज की उजास पर धूल गिरती रहती है!

एक समय कुछ आवाजों में इतना अधिक लोहा था
कि अगली बारिश में ही खा गयी उन्हें जंग
कुछ आवाजें ऐसी भी कि लालच की बाढ़ में
मारी गयी उनकी बाढ़

आवाज हमारे जीवित रहने की मिसाल है
हिदायत है कि हम मरे नहीं हैं!

आवाज की ऊष्मा-हरियाली से ही
उजड़ता नहीं आकाश-वृक्ष
और धरती की उर्वरता पर
बना रहता है हमारा विश्वास

आवाज और आदमी समकालीन हैं
हर शब्द में

आदमी की मेहनत दिखती है!

तथा

तथा एक सेतु का नाम है
दरअसल आरम्भ में भाषा की सृष्टि में ही
पूरब तथा पश्चिम को जोड़ने के लिए
उत्तर तथा दक्षिण की आवाजाही के लिए
निर्मित हुआ 'तथा' नामक एक सुंदर सेतु
इस तरह तथा को दिशाओं के मेलजोल का काम मिला

हमारे दोनों होंठों के बीच आवाज के लिए जगह देती हुई
जो जगह है वह 'तथा' है

भूत, वर्तमान, भविष्य को
एक दूसरे से मिलाती हुई
घेरती हुई केवल अपने नाम भर की जगह
जो जगह है वह तथा है

वाक्य में जहां फांक दिखने लगे
सोचना चाहिए तथा अवकाश पर है
या बुलाया नहीं गया उसे जानबूझ कर
शब्दों का जहां गड़बड़ाने लगे नाम और गोत्र
समझना चाहिए तथा को मिला नहीं उचित मान

शब्दों, वाक्यों, पंक्तियों की परस्परता को
तथा ने ही बुना है गझिन और महीन

कविता तथा कथा के बीच
तथा ही बताता, समझाता रहा है
कि शुरू से ही इनका रिश्ता है घुलामिला

तथागत!
तथा भी आजकल व्यथा में है
आये दिन के झगड़े टंटे से

है वह बहुत उदास
दिशाओं की खींचतान ने दुश्वार कर दिया है
उसका जीना

फिर भी डटा हुआ है वह
जुबान की कायनात में
आपसदारी को करता हुआ
कायम